कार्ल मार्क्स

मार्क्स का अलगाव का सिद्धांत -

चूँकि मार्क्स वस्तुओं की स्वायत्त सत्ता को स्वीकार करता है इसलिए वस्तुओं के निर्माण की अवस्थाओं में परिवर्तन लाकर ही अलगाव से पार किया जा सकता है। संक्षेप में जहाँ हेगेल का अलगाव चेतना की एक अवस्था है (जिसे चेतना की दूसरी अवस्था द्वारा दूर किया जा सकता है) वहाँ मार्क्स के अलगाव का संबंध वास्तविक अस्तित्व वाली वस्तुओं से है और उस पर नियंत्रण वस्तुओं से संबंधित गतिविधियों के वास्तविक क्षेत्र में ही किया जा सकता है।

मार्क्स की दृष्टि में हेगेल मत की इस स्थिति का एक परिणाम तो यह है कि संपूर्ण इतिहास चिंतन का कार्य खत्म कर रह गया है, क्योंकि हेगेल सभी मूर्त घटनाओं को विचार या आत्मा की अभिव्यक्ति मानता है। चूँकि हेगेल की दृष्टि में अलगाव की समाप्ति केवल चेतना की ~~दृष्टि में होती है~~ स्तर पर होती है इसलिए वास्तविक अलगाव को समाप्त करना असंभव होता है इसलिए मनुष्य को अपनी दासता का वैधीकरण करना पड़ता है। दूसरे, मार्क्स के अनुसार अलगाव ऐतिहासिक स्थिति और

इसके परिणामों में बहुमूल है। पुंजीवादी समाज में वस्तुओं का उत्पादन मनुष्य को अपनी वास्तविक क्षमता प्राप्त करने में सहायक नहीं होता। मनुष्य जब वस्तुओं के उत्पादन में संलग्न होता है तब उसकी अपनी क्षमता को प्राप्त करने में असमर्थता अलगाव का कारण बनती है। इसलिए जब वस्तुओं के उत्पादन से मानव की संभवनाएँ प्रकट होती है तब अलगाव को नियंत्रित किया जा सकता है पूंजीवाद में अलगाव की स्थितियों में उत्पादन होता है जिसके परिणाम स्वरूप वस्तुओं के उत्पादन से अमानवीकरण होता है। किसी श्रमिक द्वारा अपने श्रम से उत्पाद वस्तु अब स्वयं उसके विरुद्ध अन्यदेशीय हो जाती है क्योंकि वह उस श्रमिक के अधिकार में न रहकर उससे स्वतंत्र हो जाती है। सारांश यह है कि श्रम स्वयं में एक वस्तु बन जाता है। उसके श्रम से उत्पादित वस्तु उस श्रमिक की नहीं हो जाती वह वस्तु अब उसकी नहीं है। वह किसी और की होती है — पूंजीपति या मालिक की। जितनी बड़ी यह वस्तु होती है उतना ही उस श्रमिक का स्वामित्व कम हो जाता है वह अमानवीकृत ~~होत~~ हो जाता है। इस प्रकार आप कह सकते है कि मार्क्स के अनुसार श्रम एक अमानवीकरक कार्य होता है।